हिन्दी एक मीठी भाषा है – पी. डी. शिरुर

हावेरी (कर्नाटक)

शताब्दी से शिक्षा सेवा को समर्पित 'कर्नाटक लिंगायत शिक्षा समिति (K.L.E. Society) द्वारा संचालित तथा कर्नाटक विश्वविद्यालय की अंगीभूत इकाई गुद्लेप्पा हल्लिकेरी कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, हावेरी (कर्नाटक) एवं महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) के संयुक्त तत्वावधान में

आयोजित व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा **'हिन्दी के प्रचार–प्रसार में दक्षिण भारत के साहित्यकारों का योगदान'** विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 15 और 16 अक्टूबर, 2015 को सोल्लास सम्पन्न हुई, जिसका उद्घाटन करते हुए बंगलुरु विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त हिन्दी विभागाध्यक्ष व बसव साहित्य के मर्मज्ञ तथा 'बसव मार्ग' के सम्पादक प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी ने अपने उद्घाटन उद्बोधन में कहा कि हिन्दी में भी भारतीय साहित्य की रचना होनी चाहिए, चाहे वह अनुवाद–सृजन से ही क्यों न हो ! उन्होंने यह भी कहा कि जैसे 'भक्ति द्राविड़ी उपजि' सार्थक है वैसे ही हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए दक्षिण का प्रयास भी सार्थक है जिसके परम पुरोधा अहिंदी भाषी महात्मा गाँधी थे, जिन्होंने दक्षिण भारत

हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना 1918 में चेन्नई में की थी, बाद में दक्षिण भारत के अन्य तीन प्रदेशों में यथा हैदराबाद, कोचीन तथा धारवाड़ में इसकी स्थापना गाँधी के जीवन–काल में ही सम्पन्न होती है जो अनवरतरुप से आज भी क्रियाशील हैं।

उद्घाटन आतिथ्य में संगोष्ठी की राष्ट्रीय संरचना को खोलते हुए कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एम. मदरी ने यह बताया कि

उक्त विषय पर यह संगोष्ठी पहली बार दक्षिण में हो रही है, इस तरह के आयोजन दक्षिण के अन्य राज्यों में भी होना चाहिए। यह एक अच्छी शुरुआत है। उद्घाटन सत्र उल्लासपूर्ण तब और हो गया जब कॉलेज के शासी–निकाय के अध्यक्ष श्री पी. डी.शिरुर ने संगोष्ठी की अध्यक्षीय उद्बोधना में कहा कि हिन्दी एक मीठी भाषा है, जिसको हिन्दी आती है वह कहीं भी जा सकता है ..... अर्थात् उसे इस भूभाग पर कहीं भी भाषायी समादर मिलेगा। यह संगोष्ठी की सफलता का सूत्र प्रतिपादित करता है।

संगोष्ठी में संयुक्त तत्वावधानी महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र अस्वस्थता के कारण उपस्थित न हो सके, परंतु उन्होंने संगोष्ठी के विषय से प्रफुलित होकर अतीव प्रसन्नता के साथ अपना शुभ–संदेश प्रेषित किया, जिसे संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में वाचित किया गया। वर्धा से विश्वविद्यालय के शिक्षक डॉ. धूपनाथ प्रसाद, डॉ. एच.ए. हुनगुंद, डॉ. रामानुज अस्थाना तथा डॉ. उमेश कुमार सिंह की उपस्थिति और संगोष्ठी के विभिन्न दायित्वों का निर्वहन गुद्लेप्पा हल्लिकेरी कॉलेज, हावेरी के लिए सहोदरता का सूत्र पिरो दिया।

इस तरह संगोष्ठी समारभ्भ होकर 6 सत्रों में सम्पन्न दो दिवसीय संगोष्ठी 136 शोधपत्रों के वाचन का आधार बनी, जिसमें विभिन्न राज्यों के प्रतिभागी सम्मिलित हुए जिससे दक्षिण के चारों प्रदेश के प्रमुख साहित्यकारों के अवदान के व्याख्या–विश्लेषण से हिन्दी के प्रचार–प्रसार की भूमिका की पीठिका प्रदर्शित हो गयी।

इस संगोष्ठी की एक अन्य उपलब्धि यह रही, जब संगोष्ठी पत्र के बहाने यूजी और पीजी के विद्यार्थियों से स्पर्धा का आयोजन हुआ, जिसमें 32 छात्रों ने सहभागिता की इन्हें उत्साहवर्धन के रुप में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत भी किया गया। अहिन्दी प्रदेश में छात्रों ने जिस उत्साह और उल्लास से गभ्भीरता पूर्ण पत्र–वाचन किया, यह उनके साहस और हिन्दी के प्रति सर्म्पण का संवेदन था जिससे दक्षिण में हिन्दी विरोधी अवधारणा का प्रचार ध्वस्त हो गया। इन्हीं स्पर्धी छात्र–छात्राओं में एक का कथन था कि ''हिन्दी अब इबारत बन चुकी है'' तो दूसरे का खोजी कथन ''हिन्दी सीखने से मस्तिष्क के अनेक तंतु विकसित होते हैं'' (राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र, गुड़गाँव)

संगोष्ठी का समापन सत्र नागपुर से आई हिन्दी की प्रसिध्द लेखिका डॉ. सुशीला टाकभौरे की गरिमामय उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता करते हुए कॉलेज के प्राचार्य प्रो. एस. बी. नाडगौडा ने हिन्दी की इस संगोष्ठी की सफलता के

लिए आयोजन सचिव, हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. महादेवी पी. कणवी को साधुवाद दिया तथा संगोष्ठी–समापन–सौहाद्र भी प्रकट किया।

डॉ. डी. एन. प्रसाद